कार्यशाला के अध्यक्ष

प्रो देबी प्रसाद मिश्र

एयरोस्पेस इंजीनियरिंग विभाग
आईआईटी, कानपुर- 208 016
फोन: 0512-2597125
ईमेल: dpmishraiitk@gmail.com

आयोजन समिति के सदस्य

प्रो. एच. सी. वर्मा
पूर्व प्रोफेसर आईआईटी, कानपुर

प्रो. एन. तिवारी
प्रोफेसर, आईआईटी, कानपुर

प्रो. ए. त्रिपाठी,
प्रोफेसर, आईआईटी, कानपुर

प्रो. आर. पी. तिवारी,
प्रोफेसर, एमएनएनआईटी प्रयागराज

प्रो. रंजीतप्रसाद,
प्रोफेसर, एनआईटी जमशेदपुर
प्रो. विवेक कुमार,
प्रोफेसर, आईआईटी दिल्ली

संरक्षक: प्रो. अभय करंदीकर,
निदेशक, आईआईटी, कानपुर
सह-संरक्षक: श्री अतुल कोठारी,
महासचिव, शिक्षा संस्कृतिक उत्थान न्यास
नई दिल्ली
राष्ट्रीय सलाहकार समिति:
डॉ. ए. शर्श्रबुद्धे,
अध्यक्ष, एआईसीटीई, नई दिल्ली
प्रो. डी. डी. मिश्र,
अध्यक्ष, आईआईटी, धनबाद
प्रो. एन. एन. पांडा
निदेशक, एनआईटीटीटी, चेन्नई
प्रो. डी. पी. सिंह,
अध्यक्ष, एमएनआईटी, इलाहाबाद
प्रो. ए. शुक्ला
निदेशक, आईआईआईटी, पुणे
प्रो. आर. प्रसाद,
पूर्व प्रोफेसर, आईआईटी, नई दिल्ली
श्री. ए. प्रधान,
निदेशक, नई दिल्ली
प्रो. वी. बापट
प्रोफेसर, आईआईटी, मुंबई
प्रो. पी. ए. रामकृष्ण
प्रोफेसर, आईआईटी, मद्रास
प्रो. डी. पी. मिश्र
प्रोफेसर, आईआईटी, कानपुर

राष्ट्रीय कार्यशाला

तकनीकी शिक्षा प्रणाली में भारतीय पारंपरिक ज्ञान का समावेश

7th सितंबर, 2019

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर

स्थान: आईआईटी, कानपुर

प्रस्तावना: आज आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी अपने उन्नत सोपान पर है एवं भौतिकवादी प्रगति और समृद्धि की क्षमता को बढ़ाने के लिए सबसे शक्तिशाली उपकरण के रूप में स्वीकृति प्राप्त कर चुका है। हालांकि, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के असंतुलित उपयोगों और दुरुपयोगों के परिणामस्वरूप प्राकृतिक संसाधनों का अधिक दोहन हुआ है, जो ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन, प्रजातियों का विलुप्त होना, मानव जाति के लिए प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास आदि वैश्विक समस्यायों का प्रादुर्भाव हुआ है नतीजतन, यह अनुमान लगाया जाता है कि इस खूबसूरत ग्रह में जीवन का समर्थन करने वाली प्राकृतिक प्रणाली एक विनाशकारी अंत तक आ सकती है, जो मानव निर्मित विलुप्त होने के लिए अग्रणी है। इसलिए भारतीय संस्कृति और परंपरा के सिद्धांतों के आधार पर महात्मा गांधी, विनोबा भावे, रवींद्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानंद, आदि के द्वारा अभिव्यक्त पारंपरिक ज्ञान प्रणाली को देखना समय की जरूरत है क्योंकि यह स्वाभाविक रूप से टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल है। हमारे गौरवशाली राष्ट्र का कायाकल्प करने के लिए आधुनिक जीवन में बेशुमार चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, हमें पारंपरिक ज्ञान प्रणाली पर ध्यान देने की जरूरत है जो प्राचीन भारत में इसके विकास के लिए थी। दुर्भाग्य से इस प्राचीन और पारंपरिक ज्ञान प्रणाली को इसके शानदार अतीत के बावजूद हमारे छात्रों को प्रदान नहीं किया गया है। बेशक, कई व्यक्ति और समूह भारतीय पारंपरिक ज्ञान प्रणाली को पुनर्जीवित करने की बहुत कोशिश कर रहे हैं, लेकिन भारतीय युवाओं में इसे फैलाने में कोई ठोस सफलता नहीं मिली है क्योंकि यह वर्तमान शिक्षा प्रणाली के साथ एकीकृत नहीं है। इसलिए हमारे गौरवशाली देश के पुनर्निर्माण के लिए आधुनिक जरूरतों और लोगों की आकांक्षा को संबोधित करते हुए, आधुनिक शिक्षा प्रणाली में पारंपरिक ज्ञान प्रणाली को और अधिक सावधानीपूर्वक और समीचीन रूप से एकीकृत करने की प्रक्रिया का पता लगाना और उसमें तेजी लाना महत्वपूर्ण है।इन पहलुओं को ध्यान में रखते हुए प्रस्तावित कार्यशाला का आयोजन किया जाना है जो पारंपरिक ज्ञान प्रणाली को अपनाने की विभिन्न रणनीतियों का पता लगाने और प्रस्तावित करने का प्रयास कर सकती है जो भारतीय संस्कृति और परंपरा के लोकाचार को पुनर्जीवित कर सकते हैं।

उद्देश्य: तकनीकी शिक्षा प्रणाली में भारतीय पारंपरिक ज्ञान को शामिल करने पर इस राष्ट्रीय कार्यशाला का उद्देश्य वर्तमान तकनीकी शिक्षा प्रणाली में पारंपरिक ज्ञान प्रणाली को शामिल करना है, तथा

- पारंपरिक ज्ञान प्रणाली के ऐतिहासिक दृष्टिकोण को विकसित करना
- पारंपरिक ज्ञान प्रणाली के मूल आधार को समझना।
- आधुनिक समय में अपनाए जा सकने वाले विचारों और अवधारणाओं पर गंभीर रूप से अन्वेषण और चिंतन करना ।
- आधुनिक छात्रों के लिए पारंपरिक ज्ञान प्रणाली पर पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र के बुनियादी दर्शन को विकसित करना।
- आधुनिक शिक्षा प्रणाली को एकीकृत करने के लिए अभिनव विकास रणनीतियों को निर्धारित करना।
- भविष्य में प्रयोग करने के लिए पारंपरिक ज्ञान प्रणाली पर शोध की समस्याओं के अस्तित्व एवं समझ को बढ़ावा देना।

पंजीयन शुल्क: इस कार्यक्रम के लिए कोई पंजीकरण शुल्क नहीं है। हालांकि प्रतिभागी को ठहरने के लिए भुगतान करना पड़ सकता है।

लेख जमा करने के लिए दिशानिर्देश: पूर्ण लेख को ईमेल या डॉक के माध्यम से या अंग्रेजी या हिंदी में कार्यशाला में माइक्रोसॉफ्ट वर्ड दस्तावेज़ पर 14 अगस्त, 2019 में ए4आकार के प्रारूप में प्रस्तुत किया जाना है। महत्वपूर्ण विवरण जैसे लेखक का नाम और संबद्धता के साथ संपर्क पता, ईमेल, फोन नंबर इत्यादि शामिल होने चाहिए।

आवास:

सीमित आवास आई आई टी, कानपुर में उपलब्ध है। आम तौर पर प्रतिनिधियों को आवास के लिए खर्च वहन करना होगा। सीमित मामलों में, खर्च, आवास के खर्चों को फिर से प्रतिपूर्ति किया जा सकता है।

समय सीमा:

पूर्ण लेख प्राप्ति की तिथि: 24 जुलाई, 2019

पूर्ण लेख स्वीकृति की तिथि: 15 अगस्त, 2019